कक्षा- नौवीं विषय- हिन्दी

क्षितिज भाग-1

पाठ-17

कविता – बच्चे काम पर जा रहे हैं

कवि – श्री राजेश जोशी

मॉड्यूल-1/1

प्रस्तुतकर्ता :
खीमाराम
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2, तारापुर.

कवि- राजेश जोशी – जीवन परिचय

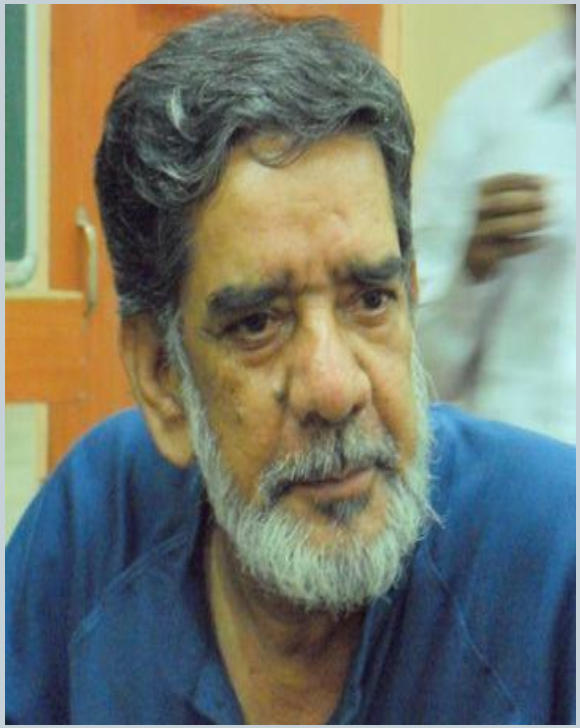

राजेश जोशी का जन्म सन 1946 में मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ जिले में हुआ था। उन्होंने अपने शिक्षा समाप्ति के बाद पत्रकारिता से अपने जीवन की शुरुआत की और कुछ वर्षों तक अध्यापन का कार्य भी किया। उन्होंने कविता,कहानी, नाटक और लेख आदि लिखे।

- उनके प्रमुख काव्य संग्रह "एक दिन बोलेंगे पेड़", "मिट्टी का चेहरा","नेपथ्य में हँसी" और "दो पंक्तियों के बीच" है।
- राजेश जोशी की कविताएँ सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई होती हैं। उनकी कविताओं में स्थानीय बोल-चाल के शब्दों के साथ-साथ उर्दू शब्दावली का भी प्रयोग देखने को मिलता है।

कविता - 1

- कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
- सुबह सुबह
- बच्चे काम पर जा रहे हैं
- हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
- भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
- लिखा जाना चाहिए, इसे सवाल की तरह
- काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

शब्दार्थ एवं भावार्थ:

- कवि कह रहे हैं कि अत्यधिक सर्दी के कारण सड़क भयंकर कोहरे से ढँकी हुई हैं। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा है। ऐसी भयंकर ठंड में भी कुछ बच्चे सुबह-सुबह काम पर जाने के लिए निकल पड़े हैं। वे अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिए विवश हैं, लिहाजा वे मज़दूरी के लिए शहर या नगर की तरफ़ जा रहे हैं। बच्चों का इस तरह काम पर जाना झकझोर देता है। इसे एक विवरण की तरह लिखना या कहना बहुत ही भयंकर बात है बल्कि इसे तो हमें एक प्रश्न की तरह लिखना या कहना चाहिए । यह समाज से,शासन से, प्रशासन से यह पूछा जाना चाहिए कि आखिर ये छोटे-छोटे बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं।

- **कठिन शबदार्थ:**
- कोहरा = धुँध विवरण = व्याख्या अथवा विस्तार

2

- क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
- क्या दीमकों ने खा लिया है
- सारी रंग-बिरंगी किताबों को
- क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
- क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
- सारे मदरसों की इमारतें
- क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और सारे घरों के आँगन
- खत्म हो गए हैं एकाएक

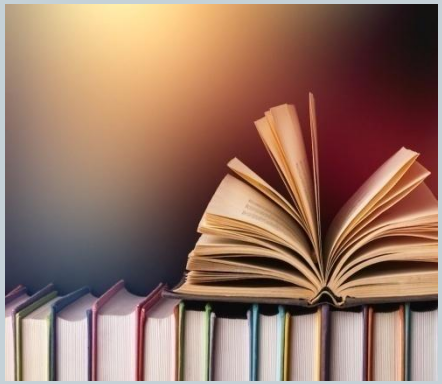

शब्दार्थ एवं भावार्थ:

- बच्चों को काम पर जाता देखकर कवि बहुत अधिक दुखी है। कवि कहते हैं कि क्या उअनकी सारी गेंदें अंतरिक्ष में कहीं खो गई है, जो मिल नहीं रही है? क्या उनकी रंग- बिरंगी किताबों को दीमक छट कर गए हैं , जो वे पढ़ नहीं पा रहे हैं?क्या उनके सारे खिलौने काले पहाड़ के नीचे दब कर टूट गए हैं, जिससे वे खेल नहीं पा रहे हैं?या फ़िर क्या उनकी स्कूल की इमारत भयंकर भूकंप की वजह से टूट गई ,इसलिए वे स्कूल नहीं जा रहे हैं? कवि पूछते हैं कि काया अचानक सारे मैदान, घरों के आँगन, बाग-बगीचे सब समाप्त हो गए हैं? ऐसा क्या हो गया है कि बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है?

- **कठिन शब्दार्थ:**
- अंतरिक्ष = आकाश
- मदरसा = पाठशाला

3

- तो फ़िर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
- कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
- भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
- हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल
- पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुजरते हुए
- बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
- काम पर जा रहे हैं।

शब्दार्थ एवं भावार्थ

- कवि कहते हैं कि अगर दुनिया से बाग-बगीचे,स्कूल, खेल के मैदान, खिलौने आदि सब समाप्त हो गए हैं तो फ़िर बचा ही क्या है इस दुनिया में? अगर ऐसा होता तो वास्तव में यह बहुत ही भयंकर बात होती, मगर इससे भी भयंकर बात यह है कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। सारी चीज़ें यथावत और सही सलामत है। कुछ भी नष्ट नहीं हुआ है। उसके बावजूद दुनिया भर की सड़कें मज़दूरी के लिए जाते बच्चों से भरी पड़ी हैं। यह बहुत ही भयानक स्थिति है। अर्थात सब कुछ है तो फ़िर बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं ?

- **कठिन शब्दार्थ:**
- हस्बमामूल = यथावत, सही सलामत,पहले जैसा।